डॉ॰ किरण माला

संस्कृत विभाग

तत्पुरुष समास (यूनिट -2)

B॰A॰ part III Hons॰

चतुर्थी तदर्थार्थ-बलि-हित-सुख-रक्षितै :

चतुर्थ्यंत सुबन्त का तदर्थवाचक, अर्थ, बलि हित, सुख,रक्षित-इन छ:प्रातिपदिकों के सुबंट के साथ समास होता है और इस समास को तत्पुरुष कहते हैं ।

उदाहरण -

1. **तदर्थवाचक-** यहाँ तद् से चतुर्थ्यंत सुबन्त का बोध होता है । इस प्रकार तदर्थ का अर्थ होगा - चतुर्थ्यंत सुबन्त के लिए । अर्थात चतुर्थ्यंत सुबंत के लिए जिसका उपयोग होता है , उसके वाचक प्रातिपदिक के सुबंत के साथ उस चतुर्थ्यंत सुबंत का समास होता है।किन्तु चतुर्थ्यंत सुबन्त और तदर्थ वाचक सुबंत में प्रकृति -विकृति भाव होना चाहिए तभी समास होगा । उदा॰ - **यूपदारू** - यूपाय दारू इस विग्रह में सुबंत दारू का उपयोग चतुर्थ्यंत यूपाय के लिए होता है। दारू (लकड़ी)यहाँ प्रकृति है और यूपाय विकृति , क्योंकि यूप लकड़ी से बन्ता है। जहाँ प्रकृति विकृति भाव नहीं होगा वहाँ समास नहीं होगा यथा- रंधनाय स्थाली यहाँ रंधनाय और स्थाली मे प्रकृति विकृति भाव संबंध नहीं है ।
2. **अर्थ -** उदा॰ द्विजाय अर्थ: = **द्विजार्थ:** । द्विजाय चतुर्थ्यंत का सुबन्त अर्थ के साथ समास हुआ है। अर्थ सुबंत का नित्य समास होता है और समस्त पद का लिङ्ग विशेष्य के लिङ्ग के अनुसार होता है। - द्विजार्थ: सूप:,(पुल्लिंग), द्विजार्था यवागु (स्त्रीलिंग), द्विजार्थम् पय: ।

3. **बलि** - **भूतबलि:** = भूतेभ्यो बलि: इस विग्रह मे चतुर्थ्यंत सुबन्त भूतेभ्यो का बलि सुबंत के साथ समास हुआ है ।
4. **हित** - गोभ्यो हितम् = **गोहितम्** यहाँ गोभ्य: चतुर्थ्यंत का सुबन्त हितम् के साथ समास हुआ है ।
5. **सुख** - **गोसुखम्** = गोभ्यो सुखम् इस विग्रह में चतुर्थ्यंत गोभ्य : का सुबन्त सुखम् के साथ समास हुआ है ।
6. **रक्षित** - **गोरक्षितम् =**गोभ्यो रक्षितम् इस विग्रह मे गोभ्य : चतुर्थ्यंत का सुबन्त रक्षितम् के साथ समास हुआ है ।

सूत्र - पञ्च्मी भयेन: :-

पञ्चम्यन्त सुबन्त का भय प्रातिपदिक के सुबंत के साथ समास होता है और उस समास को तत्पुरुष समास कहते हैं ।

उदा॰ - चोराद् भयम् = **चोरभयम्** यहाँ पञ्चम्यन्त सुबन्त चोराद् का भयम् सुबंत के साथ समास हुआ है ।

स्तोकांतिक -दूरार्थ -कृच्छ्राणि-क्तेन :- स्तोक(थोड़ा) ,अंतिक(समीप) ,दूरार्थ वाचक और कृच्छ्र (कष्ट) इन चार प्रादिपदिकों के पञ्चम्यन्त सुबंत का साथ क्त -प्रत्यान्त के सुबंत के साथ समास होता है।

उदा॰ -

- स्तोक- स्तोकाद् मुक्त: - स्तोक ङसि मुक्त सु मे समास होकर प्रातिपदिक संज्ञा होने पर सुपोधातु॰ से सुप का लोप प्राप्त होता है ----किन्तु अगले सूत्र से इसका निषेध हो जाता है ।

पंचम्या: स्तोकादिभ्य: :- उत्तरपद परे होने पर स्तोक(थोड़ा) ,अंतिक(समीप) ,दूरार्थ वाचक और कृच्छ्र (कष्ट) इन चार प्रादिपदिकों के पश्चात पंचमी विभक्ति (ङसि) का लोप नहीं होता । उदा॰ - - स्तोक ङसि मुक्त सु में उत्तरपद मुक्त सु परे होने के कारण स्तोक के बाद आए ङसि का लोप नहीं होता । तो केवल सु का लोप होकर - स्तोक ङसि मुक्त । पुन : टाङ्गसिङसाम्॰ सूत्र से ङसि के स्थान पर आत् आदि होकर **स्तोकान्मुक्त:** रूप सिद्ध होता है ।

- अन्तिक - अन्तिकाद् आगत: इस विग्रह मे पञ्चम्यन्त सुबंत अन्तिकाद् का क्त प्रत्यान्त आगत : सुबंत का समास होकर **अन्तिकादागत:** रूप बना ।
- दूरार्थवाचक - अभ्याशादागत : इस उदा ॰ मे अभ्याशाद् आगत : इस विग्रह में दूरीवाचक सुबंत अभ्याशाद् का क्त प्रत्यान्त आगत: के साथ समास होकर अभ्याशादागत : रूप सिद्ध हुआ ।
- इसी प्रकार दुराद् आगत: - से **दूरादागत:** रूप सिद्ध होता है ।
- कृच्छ्र - कृच्छ्राद् आगत : से **कृच्छ्रादागत:** रूप सिद्ध होता है ।

षष्ठी :- षष्ठयंत सुबंत का सुबंत के साथ समास होता है और उसको तत्पुरुष समास कहते हैं । उदा॰ राज्ञ: पुरुष : - **राजपुरुष:** इस उदा॰ में राज्ञ : षष्ठयंत का सुबंत पुरुष : के साथ समास हुआ है ।

पूर्वाऽपराऽधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे :- पूर्व अपर ,अधर ,और उत्तर इन चार प्रातिपदिकों के सुबंत का एकत्व वाचक अवयवी के साथ समास होता है,और उस समास को तत्पुरुष समास कहते हैं ।

उदा॰

- पूर्वकाय: - पूर्वम् कायस्य इस विग्रह मे सुबंत पूर्वम् का अवयवी वाचक सुबंत कायस्य के साथ समास होकर **पूर्वकाय:** रूप बना है।

- इसी प्रकार -अपरम् कायस्य से - **अपरकाय:** ,अधरम् कायस्य से -**अधरकाय:** ,और उत्तरम् कायस्य से - **उत्तरकाय:** रूप बनेगा ।

अर्धम् नपुंसकम् :- नपुंसकलिंग अर्ध प्रातिपदिक के सुबंत का एकत्वबोधक अवयवी वाचक सुबंत के साथ समास होता है और उस समास को तत्पुरुष समास कहते हैं । उदा॰ - अर्धम् पिप्पल्या : इस विगराह में नपुंसकलिंग सुबंत अर्धम् का अवयवी वाचक सुबंत पिप्पल्या: के साथ समास होकर -**अर्धपिप्पली** रूप बना।

सप्तमी शौण्डै: :- सप्तम्यंत सुबंत का शौण्ड आदि के सुबंत के साथ समास होता है और उस समास को तत्पुरुष कहते हैं ।

उदा॰ अक्षेषु शौण्ड : = **अक्षशौण्ड:** रूप बनता है। इसी प्रकार **अक्षकितव: , अक्षधूर्त:** आदि रूप बनते हैं ।